Gupta period (Part -16)

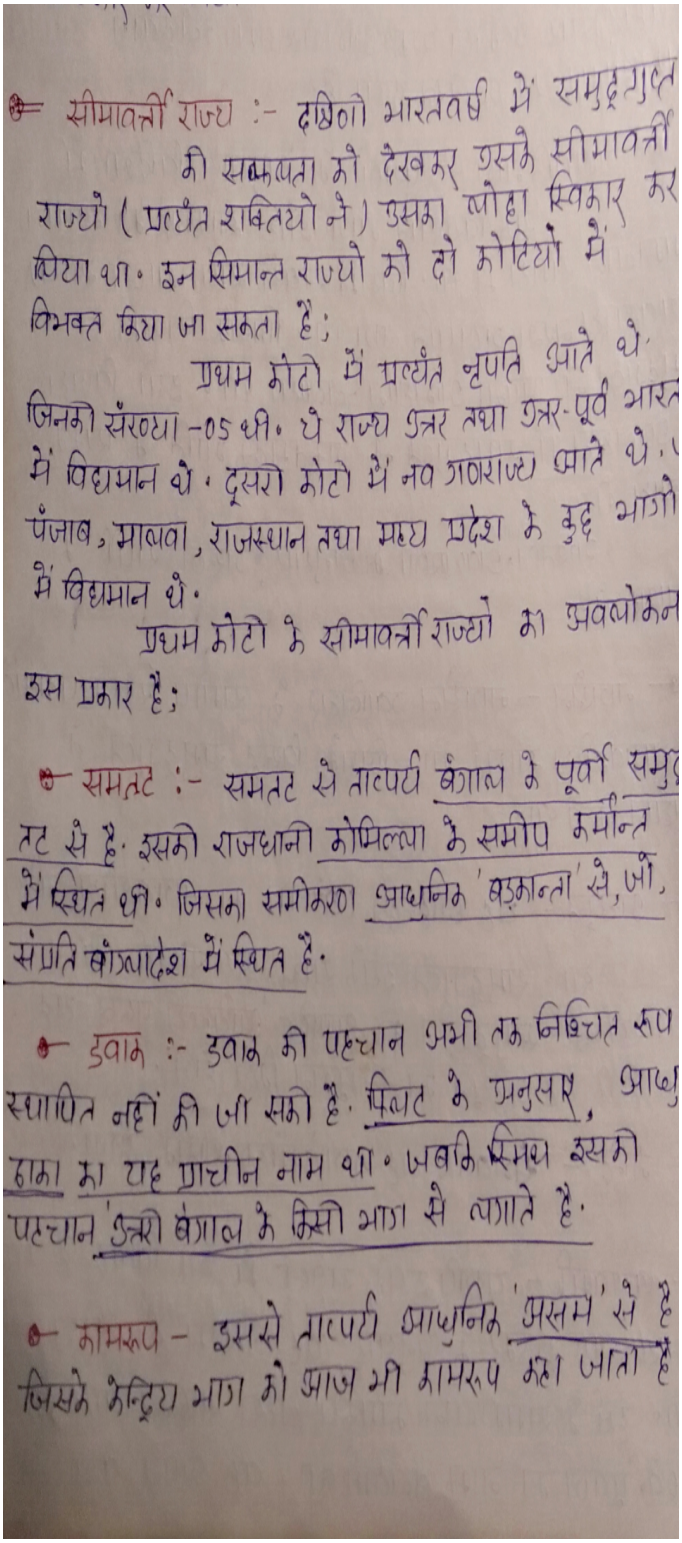

- सीमावर्ती राज्य :- दक्षिणी भारतवर्ष में समुद्रगुप्त की सक्रियता को देखकर उसके सीमावर्ती राज्यों (प्रत्यंत शक्तियों ने) उसका जोहा स्वीकार कर लिया था। इन सीमान्त राज्यों को दो कोटियों में विभक्त किया जा सकता है;

प्रथम कोटी में प्रत्यंत नृपति आते थे, जिनकी संख्या -05 थी। ये राज्य उत्तर तथा उत्तर-पूर्व भारत में विद्यमान थे। दूसरी कोटी में नव गणराज्य आते थे, पंजाब, मालवा, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के कुछ भागों में विद्यमान थे।

प्रथम कोटी के सीमावर्ती राज्यों का अवलोकन इस प्रकार है;

- समतट :- समतट से तात्पर्य बंगाल के पूर्वी समुद्र तट से है। इसकी राजधानी कोमिल्ला के समीप कर्मान्त में स्थित थी। जिसका समीकरण आधुनिक 'बड़कान्ता' से, जो, संप्रति बांग्लादेश में स्थित है।

- डवाक :- डवाक की पहचान अभी तक निश्चित रूप स्थापित नहीं की जा सकी है। फ्लीट के अनुसार, आधु ढाका का यह प्राचीन नाम थी। जबकि स्मिथ इसकी पहचान उत्तरी बंगाल के किसी भाग से लगाते है।

- कामरूप - इससे तात्पर्य आधुनिक 'असम' से है जिसके अन्तर्गत भाग को आज भी कामरूप कहा जाता है

नेपाल – प्राचीन नेपाल आधुनिक गंडक और कोशी नदियों के बीच स्थित था. कोशी को अब भी नेपाल की घाटी कहा जाता है. नेपाल का प्रथमतः उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में हुआ है. इस ग्रंथ में यहाँ के बने हुये उत्तम कोटी के ऊनी कंबल (जिसे नेपालकम् कहा जाता था) का उल्लेख है जो कि विशेष जाति के भेड़ों के बालो से बनता था. नेपाली कंबल भारत में जनप्रिय था. समुद्रगुप्त के समय में नेपाल में लिच्छवि वंश के घोग शासन करते थे. यह राज्य वैशाली के लिच्छवि से पृथक था.

5 **कर्त्तपुर** – इसकी पहचान संदिग्ध है. कुछ ने इसकी समता जालंधर जिले के करतारपुर के साथ की है. तो कुछ अन्य ने इसकी पहचान कुमाऊँ गढ़वाल के भूतपूर्व कतुरिया राज्य के साथ की है.

दूसरी कोटी के सीमावर्त्ती राज्य, जिसे गणतांत्रिक राज्य कहा गया है, जिसमें कुल 09 गणराज्य आते थे. इनमें कुछ तो अति प्राचीन थे. सिकंदर के आक्रमण के समय वे Puujab तथा पश्चिमोत्तर भारत के अन्य भागो में शासन करते थे. सिकंदर के साथ आये युनानी लेखकों यथा; ऑनेसिक्रिटस, नियार्क तथा एरिस्टोब्यूलस इत्यादि ने उनकी युद्ध और कला तथा व्युह रचना की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है. मौर्यों की साम्राज्यवादी नीति के कारण उनकी शक्ति को गहरा आघात पहुँचा था. बाद में इन्होनें अपनी शक्ति को पुनः संचित किया. मौर्योत्तर काल और प्राक् गुप्त युग के मध्यवर्त्ती अभिलेख और साहित्य में उनका उल्लेख यत्र-तत्र प्राप्त हो पाता है. हिन्द-युनानीय शक इत्यादि बाह्य आक्रमणों के कारण ये मूल अधिकार क्षेत्रों को त्यागते हुये क्रमशः मालवा, Rajasthau, पूर्वी पंजाब तथा मध्य प्रदेश के क्षेत्रों के विभिन्न भागो में बस गये थे. समुद्रगुप्त कालीन गणराज्यों का परिचय इस प्रकार है;